B.B.M. B.Ed. COLLEGE

SARDAHA, CHAS, BOKARO (JHARKHAND)-827013

Recognized by NCTE & Affiliated to Binod Bihari Mahto Koyalanchal University, Dhanbad , Jharkhand & J.A.C. Ranchi

Email Id- bbmbedcollege2010@gmail.com

E-copies of outer jacket/content page of the journals in which articles are published

Index

संचेतना पत्रिका : महीप सिंह की संघर्ष यात्रा 1–3
आनन्द प्रकाश सिंह

राग दरबारी : उद्देश्य एवं व्यंग्य 4–5
संजय कुमार व डॉ0 रामप्रवेश सिंह

शिवमूर्ति का कथा–संसार और स्त्री पात्र 6–7
मन्नी लाल पटेल व डॉ0 हौशिला प्रसाद पाल

कौटिल्य की राजस्व व्यवस्था 8–9
डॉ0 सुमित कुमार

ध्रुपद में अनिबद्ध गान की परम्परा 10–12
डॉ0 संगीता घोष

व्यंग्य साहित्य स्वरूप–निरूपण 13–17
सुधीर कुमार जोशी

बौद्धसत्व की आध्यात्मिकता 18–19
डॉ0 राम कृष्ण

वर्तमान युग में बौद्ध–धर्म की प्रासंगिकता 20–22
डॉ0 किरन देवी

कबीर काव्य में आध्यात्मिक–सामाजिक दर्शन 23–25
डॉ0 सर्वेश कुमार

वेदव्यास की दृष्टि में संगीतविद्याविमर्श 26–28
डॉ0 नंदिता मिश्रा

छायावादोत्तर काल की पृष्ठभूमि का अवलोकन तथा प्रगतिवाद का पदार्पण 29–30
डॉ0 गजेन्द्र उबारन गिरि

चक्र बौद्ध धर्म के मांगलिक प्रतीक 31–32
डॉ0 राजेश कुमार तिवारी

उत्तराखण्ड में पर्यटन एवं प्रवजन के विविध आयाम : एक समाज वैज्ञानिक विश्लेषण 33–36
बृज मोहन सिंह व डॉ0 कौशल किशोर

वैदिक साहित्य में कृषि का वर्णन 37–39
डॉ0 जय प्रकाश पाण्डेय

श्रीलाल शुक्ल के 'रागदरबारी' उपन्यास में लोकतांत्रिक मूल्य 40–42
डॉ0 अखिलेश कुमार शर्मा 'शास्त्री'

समकालीन चुनाव सुधार की प्रासंगिकता : एक नवीन अवलोकन 43–45
डॉ0 महेन्द्र कुमार जायसवाल

पं दीनदयाल उपाध्याय की शिक्षा संबंधी प्रमुख संकल्पनाएँ 46–47
राम विलास मौर्या

प्रेमचन्द के साहित्य में दलित चेतना 48–49
डॉ0 शम्सआलम

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में विनिर्दिष्ट विद्यालय प्रबन्ध समिति के सदस्यों की जागरूकता का अध्ययन 50–52
गुलाब चन्द्र मौर्य

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता एवं मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन 53–55
सभाजीत मौर्य

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के चिंतन स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव 56–58
सुशील कुमार मिश्र

माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन 59–60
विजय प्रकाश

पं0 बलदेव उपाध्याय का साहित्य 61–62
महेन्द्र कुमार यादव

Principal
B.Ed College

गाँधी जी के द्वारा सत्याग्रह आंदोलन का विश्लेषणात्मक अध्ययन 71–74
नीलम कुमारी
श्रीमद् भागवतपुराणे दार्शनिक सिद्धान्तानां निरूपणम् 75–76
आशीष आनन्द
महाकवि कालिदास की रचनाओं में भौगोलिक ज्ञान 77–78
डॉ० सुधीर कुमार
शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के क्रियान्वयन में विद्यालय प्रबन्ध समिति की भूमिका 79–81
गुलाब चन्द्र मौर्य
माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता एवं शिक्षक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन 82–83
सभाजीत मौर्य
माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन 84–85
विजय प्रकाश
अभिज्ञानशाकुन्तलम् में पर्यावरणीय संचेतना 86–88
डॉ० वन्दना सिंह
वाराणसी जनपद के सरकारी तथा गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में मूलभूत शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता का तुलनात्मक अध्ययन 89–92
डॉ० कुमार मृत्युंजय राकेश
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का स्त्री विषयक दृष्टिकोण 93–94
सुदीप तिरकी
भारतीय काव्यशास्त्र में रसविमर्श 95–97
अनुपम सिंह
श्रीलाल शुक्ल : यथार्थ के आइने में 98–98
अम्बिका तिवारी
महात्मा बुद्ध : पुनर्जागरण के अग्रदूत, बौद्ध धर्म की वर्तमान में प्रासंगिकता 99–101
पदमजा मिश्रा
सामान्य प्रसव में योग की भूमिका 102–103
वन्दना दूबे व डॉ० साधना दौनेरिया
एनी बेसेण्ट का भारतीय शिक्षा में योगदान 104–105
श्वेता गहलौत
सम्राट अशोक के अभिलेखों में धार्मिक सहिष्णुता की परम्परा : आधुनिक संदर्भ में 106–108
डॉ० शारदा वर्मा
शिवदृष्टि में शैवदर्शन 109–111
डॉ० ऋतु सिंह
मधुमेह रोग का निर्धन लोगों पर आर्थिक एवं सामाजिक दुष्प्रभाव 112–114
सुनील कुमार, डॉ० मीरा अन्तिवाल व डॉ० जे०पी० सिंह
अर्वाचीन संस्कृत नाटकों में महिलाओं का योगदान 115–116
डॉ० अरूण कुमार त्रिपाठी
सल्तनत काल में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास 117–118
साक्षी मिश्रा
उत्तररामचरितम् में समाज एवं संस्कृति 119–120
मंजू यादव
मेघदूत में अर्थान्तरन्यास अलङ्कार प्रयोग वैशिष्ट्य 121–122
प्रवीण कुमार
आधुनिक संस्कृत महाकाव्य परम्परा में योगदान : डॉ० रेवा प्रसाद द्विवेदी एवं डॉ० रहस बिहारी द्विवेदी 123–124
अराधिका
संस्कृतवाङ्मये चतुर्दशविद्यानां स्थानवैशिष्ट्यम् 125–126
डॉ० बलराम त्रिपाठी
वेदे वास्तुशास्त्रस्य महत्त्वं 127–129
मनीष कुमार त्रिपाठी
नैषध महाकाव्य में रसौचित्य 130–132
सन्दीप कुमार गुप्ता
लघु एवं कुटिर उद्योग पर गंडक नदी का प्रभाव : गोपालगंज जिले का प्रतीक अध्ययन 133–134
आनन्द कुमार
पुराणवर्णितराजनीतौ लोकतन्त्रपरका व्यवस्था 135–138
उपप्रा. डॉ० जनार्दन उपाध्यायः

Principal

Research Discourse (ISSN 2277-2014) : An International Peer-reviewed Refereed Research Journal, Published by : SARDI, Varanasi, U.P. (INDIA)
Indexed by : IIJIF, I2OR, SJIF, I2OR Impact Factor : 4.850, Vol. IX, No. 1, April-June, 2019, Page No. : 50-52

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में विनिर्दिष्ट विद्यालय प्रबन्ध समिति के सदस्यों की जागरूकता का अध्ययन

गुलाब चन्द्र मौर्य*
*शोध छात्र, शिक्षक शिक्षा संकाय, कुटीर पी०जी० कॉलेज, चक्के, जौनपुर, उ०प्र०

सारांश : शिक्षा का अधिकार का अर्थ है कि, प्रत्येक बच्चे को अपनी गति के अनुसार शिक्षा लेने का अधिकार है। यह प्रारंभिक शिक्षा के पूरा होने तक नजदीकी स्कूल में मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा के अधिकार को सन्दर्भित करता है। शिक्षा के लिए एक सार्थक अधिकार होना चाहिए यह उपलब्ध, सुलभ, स्वीकार्य और अपनाने योग्य होना चाहिए शैक्षिणिक गतिविधियाँ, उपयोगी पाठ्यचर्या एवं अन्य संतुलित गतिविधियों के अनुकूल होना चाहिए। स्कूल प्रबन्धन समिति आर. टी. ई. एक्ट के अन्तर्गत विकेन्द्रीक व्यवस्था का बुनियादी हिस्सा है– जिससे जमीनी स्तर के हितधारकों को स्कूल के शासन में भाग लेने का मौका मिलता है। किन्तु यदि किसी कारणे से विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों का गठन एवं अधिकार कागजी कार्यवाही तक सीमित हो जाए तो शिक्षा का मूल उद्देश्य अधूरा ही रहेगा और यदि ऐसा नही है तो समिति के सदस्यों की की जागरूकता बेहतर होनी चाहिए। इस शोध पत्र में विद्यालय प्रबंध समिति के गठन आदि के प्रावधानों के प्रति जागरूकता के मापन का प्रयास किया गया है जिसमे कुछ प्रावधानों से सम्बंधित जागरूकता बेहतर है, कुछ प्रावधानों से सम्बंधित जागरूकता संतोषजनक है जबकि कुछ प्रावधानों से सम्बंधित जागरूकता में कमी है।

मुख्य शब्द : विद्यालय प्रबंध समिति, जागरूकता, शैक्षणिक गतिविधि, उपयोगी पाठ्यचर्या आदि।

प्रस्तावना : (शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 (RTE Act-2009), 4 अगस्त 2009 को लागू भारत की संसद का एक अधिनियम है, जिसमें भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 'क' के अन्तर्गत 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा के महत्व के तौर–तरीकों का वर्णन किया गया है। 1 अप्रैल 2010 से इस अधिनियम के लागू होने के बाद भारत, शिक्षा को हर बच्चे का मौलिक अधिकार बनाने वाले 135 देशों में से एक बन गया। यह अधिनियम 6 से 14 वर्ष की आयु के बीच सभी बच्चों के लिए, "शिक्षा" को मौलिक अधिकार के रूप में स्थापित करता है) शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अन्तर्गत स्कूल में बच्चों एवं उनके अभिभावकों की सहभागिता बढ़ाने एवं नामांकन तथा गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए विद्यालय प्रबन्ध समिति के गठन का प्रावधान किया गया है।

(**शोध के उद्देश्य** : जौनपुर जनपद के प्रारम्भिक विद्यालयों में गठित विद्यालय प्रबन्धन समिति के सदस्यों में समिति के प्रावधानों से सम्बंधित जागरूकता का अध्ययन करना।)

(**परिकल्पना** : जौनपुर जनपद के प्रारम्भिक विद्यालयों में गठित विद्यालय प्रबन्धन समिति के सदस्यों में समिति के प्रावधानों के प्रति जागरूकता का अभाव है।

शोध का सीमांकन :

- (शिक्षा का अधिकार पूरे भारत का संवैधानिक अधिकार है इसका कार्य स्थल समग्र भारत है, किन्तु शोध को जौनपुर जनपद तक ही सीमित रखा गया है।)
- शोध को लघु न्यादर्श पर किया गया है।
- शोध में महिला पुरुष में कोई भेद नहीं किया गया है।
- शोध को ग्रामीण क्षेत्र तक ही सीमित रखा गया है।
- शोध को प्राथमिक विद्यालय के अंतर्गत गठित विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों तक ही सीमित रखा गया है।

आवश्यकता एवं महत्व : लोकतन्त्र में सुधार के लिए, उत्पादकता में सुधार के लिए, आर्थिक विकास को बढ़ाने के लिए, समाज में वांछनीय बदलाव लाने के लिए और राष्ट्रीय विकास के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है; अतः व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण के लिए शिक्षा को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। इन सभी कारकों को ध्यान में रखते हुए, सरकार ने शिक्षा को प्रत्येक बच्चे का अधिकार बनाया। आरटीई, अधिनियम यह सुनिश्चित करने के लिए है कि प्रत्येक बच्चे को शिक्षा मिले तथा आर्थिक संसाधनों की कमी या विकलांगता की उपस्थिति के कारण वह शिक्षा से वंचित न रहे। हालांकि अधिनियम और नीति के इरादे त्रुटिहीन हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयाँ इसमें बाधा बनकर खडी हो जाती हैं इन चुनौतियों को स्वीकार कर उन्हें दूर करने के लिए विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों का जागरूक होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस दृष्टिकोण से यह शोध भी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण : (जोशी सोनिया (2019) ने "शिक्षा" के अधिकार के प्रति स्थानीय जन प्रतिनिधियों का प्रत्यक्षीकरण (बीकानेर जिले के विशेष संदर्भ में एक अनुभवपरक अध्ययन) किया और सुझाव दिया कि– सरकार को शिक्षा के लिए पर्याप्त बजट का प्रावधान करना चाहिए तथा अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, जिससे योग्य अध्यापकों की पूर्ति की जा सके, पर्याप्त विद्यालयों की स्थापना की जानी चाहिए तथा शिक्षा के क्षेत्र में अपव्यय पर रोक लगानी चाहिए।)

(**वार्षिक रिपोर्ट (2018–19) गृह मंत्रालय** : भारत सरकार के अध्याय सात में मुद्रित है कि– जनसंख्या के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग तथा लाभ–वंचित वर्ग को समान स्तर का शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने के लिए, वर्ष 2018–19 के दौरान शिक्षा के अधिकार (आरटीई) अधिनियम के तहत आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग तथा लाभ–वंचित समूह कोटा के तहत विभिन्न गैर– सहायता प्राप्त प्राइवेट स्कूलों में प्रवेश स्तर कक्षाओं में दाखिले के लिए

Sodha Mimāṁsā - ISSN 2348-4624
Letter No. NSL/ISSN/INF/2014/461
Published by : Kusum Jankalyan Samiti, Deoria, U.P. (INDIA)
UGC Journal No. 48923

I2OR Impact Factor : 3.540
Year : VIII, No. XXIX
January-March, 2021
Page No. : 79-81

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के क्रियान्वयन में विद्यालय प्रबन्ध समिति की भूमिका

गुलाब चन्द्र मौर्य*
*शोध छात्र, शिक्षक शिक्षा संकाय, कुटीर पी. जी. कॉलेज, चक्के जौनपुर, उ0प्र0

सारांश : अच्छी शिक्षा, आदत में सुमार होनी चाहिय इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा के प्रारंभिक-स्तर को ही सर्वप्रथम सुधार की विषयवस्तु बनाया जाय इसी दिशा में एक अत्यंत सराहनीय प्रयास भारत सरकार द्वारा किया गया और 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान किया गया। इस अधिनियम में यह भी निर्दिष्ट है कि प्रारंभिक शिक्षा पूरी होने तक किसी भी बच्चे को बोर्ड परीक्षा में निष्कासित नही किया जाएगा। यह अधिनियम विद्यालय छोड़ चुके (स्कूल ड्रॉप–आउट) छात्रों को विशेष प्रशिक्षण देकर, उन्हें समान उम्र के छात्रों के बराबर लाने का भी प्रावधान करता है। आरटीई अधिनियम में सर्वेक्षण की आवश्यकता होती है जो सभी पड़ोस की निगरानी करेगा, शिक्षा की आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान करेगा और इसे प्रदान करने के लिए सुविधाएँ स्थापित करेगा। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विद्यालय प्रबंध समिति के गठन का प्रावधान है। विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों से भी कुछ अपेक्षाए रखी जाती हैं जो उनकी भूमिका के रूप में विनिर्दिष्ट हैं। इस शोधपत्र मे विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों की भूमिका का अध्ययन किया गया है जिसमें कुछ आयामों की भूमिका है तो संतोषजनक हैं किंतु कुछ ऐसे आयाम भी हैं जिस संदर्भ में सदस्यों की भूमिकाओं में सुधार की आवश्यकता है।

प्रस्तावना : संविधान (86वां संशोधन) अधिनियम, 2002 में अनुच्छेद 21ए को शामिल करके शिक्षा को मौलिक अधिकार बना दिया गया है। अनुच्छेद 21ए में विचार किए गए एक उपयुक्त विधान को कानूनी रूप देने के लिए 4 अगस्त 2009 को संसद ने बच्चों के लिए निशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा (आरटीई) अधिनियम 2009 पास किया था और इसे 27 अगस्त 2009 को भारत के गजट में प्रकाशित किया गया था। बच्चों के लिए मुत एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिनियम 1 अप्रैल 2010 को पूर्ण रूप से लागू हुआ। इस अधिनियम के तहत छह से लेकर चौदह वर्ष के सभी बच्चों के लिए शिक्षा को पूर्णतः मुत एवं अनिवार्य कर दिया गया है। अब यह केंद्र तथा राज्यों के लिए कानूनी बाध्यता है कि मुत एवं अनिवार्य शिक्षा सुलभ हो सके।

विद्यालय में समुदाय की सहभागिता व स्वामित्व बढ़ाने के लिए विद्यालय प्रबंधन समिति (एस.एम.सी) का गठन किया गया है। विद्यालय प्रबंधन समिति के दो भाग होते हैं, साधारण सभा और कार्यकारिणी समिति। साधारण सभा में विद्यालय में अध्ययनरत प्रत्येक विद्यार्थी के माता–पिता / संरक्षक, समस्त अध्यापक, सम्बन्धित कार्यक्षेत्र में निवास करने वाले सभी जनप्रतिनिधि एवं समिति की कार्यकारिणी समिति में निर्वाचित / मनोनीत शेष सदस्य होते हैं। साधारण सभा के सभी सदस्य अर्थात प्रत्येक बालक के माता–पिता एवं उस परिक्षेत्र के सभी जनप्रतिनिधि एसएमसी के सदस्य हैं। उन्हें एसएमसी के समस्त दायित्व एवं अधिकार प्राप्त है। किन्तु सिर्फ अधिकार प्राप्त होने से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होना प्रारम्भ हो जाए यह भी नही कहा जा सकता इसके लिए एस. एम. सी. के सदस्यों को भी अपनी भूमिका का निर्वहन करना होगा। इसी .ष्टिकोण से इस शोध–पत्र में विद्यालय प्रबंध समिति की भूमिका का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

शोध के उद्देश्य : जौनपुर जनपद के प्रारम्भिक विद्यालयों में गठित विद्यालय प्रबन्धन समिति की भूमिका का अध्ययन करना।

परिकल्पना : जौनपुर जनपद के प्रारम्भिक विद्यालयों में गठित विद्यालय प्रबन्धन समिति की भूमिका संतोषजनक नही है।

शोध का सीमांकन :

- शिक्षा का अधिकार पूरे भारत का संवैधानिक अधिकार है अतः इसका कार्य स्थल समग्र भारत है, किन्तु शोध को जौनपुर जनपद तक ही सिमित रखा गया है।
- शोध को लघु न्यादर्श पर किया गया है।
- शोध में महिला पुरुष में कोई भेद नहीं किया गया है।
- शोध को ग्रामीण क्षेत्र तक ही सीमित रखा गया है।
- शोध को प्राथमिक विद्यालय के अंतर्गत गठित विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों तक ही सीमित रखा गया है।

आवश्यकता एवं महत्व : सर्व शिक्षा अभियान के बाद, शिक्षा का अधिकार (त्जम्) प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई एक नई पहल है, आजादी के छह दशक से अधिक समय बाद, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने लंबे समय से लंबित शिक्षा के अधिकार विधेयक को मंजूरी दे दी है, जो हर बच्चे को मुत और अनिवार्य शिक्षा देने का वादा करता है साथ ही साथ बच्चों के, माता–पिता एवं संरक्षकों आदि की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक स्कूल में विद्यालय प्रबंध समिति के गठन के का प्रस्ताव एवं आदेश करता है। विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों के भी कुछ अधिकार एवं कर्तव्य निर्धारित हैं जिसके निर्वहन से शिक्षा के अधिकार अधिनियम को सफल बनाया जा सकता है। किन्तु क्या सभी सदस्य अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं? यह विचारणीय प्रश्न है। इस अध्ययन के माध्यम से हम जानेंगे कि क्या अधिनियम के अन्तर्गत क्रियान्वित स्कूल प्रबन्ध समिति की भूमिका जमीनी स्तर पर योगदानपरक है या यह एक कागजी प्रयास है। यह अध्ययन हमें यह समझने में भी मदद करता है कि संपूर्ण के रूप में वास्तविक जागरूकता का कितना अस्तित्व है।

सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण : जोशी सोनिया (2019) ने 'शिक्षा के अधिकार के प्रति स्थानीय जन प्रतिनिधियों का प्रत्यक्षीकरण (बीकानेर जिले के विशेष संदर्भ में एक अनुभवपरक अध्ययन' किया और सुझाव दिया कि– सरकार को शिक्षा के लिए पर्याप्त

Principal
B. B. M. B.Ed College
Sardaha, Chas, Bokaro

Ethics, Peace and Value Education: Emerging need of the society.

Gayatri Kumari
Assistant Professor in Education
B.B.M.B.Ed. College,Chas,Bokaro,Jharkhand

ABSTRACT

Humankind needs to take lessons from its past in order to build a new and better tomorrow. One lesson learned is that, to prevent our violence- ridden history repeating itself, the values of peace, non-violence, tolerance, human rights and democracy will have to be inculcated in every human being.

Values are like seeds that sprout, become saplings, grow into trees and spread their branches all around. Building up of values system starts with the individual, moves on to the family and community, reorienting systems, structures and institutions, spreading throughout the land and ultimately embracing the planet as a whole. Building values is an integral factor in the process of internalization of values because one can only give what one has within. Building values is somewhat similar to building a house brick by brick. That is why Values Education is to be recognized as a fundamental need. Values based education for all members of society needs to be seen as a valuable investment.

Values are the ideals we hold that give significance and meaning to our lives and hence they underpin our beliefs or culture, influencing the decisions we make, and the action we take, and the life we lead. Values are belief of a person or a social group, a setoff emotional rule that people follow in making the right decision in life, to decide what is right and wrong, and how to act in various situations. Values are considered subjective and vary across people and cultures. Our values fundamentally affect our belief and mindsets. Understanding values can help us to create our own reality as well as gives insight into the personal realities of others.

Introduction

"Education without values, a useful as it is seems rather to make man a cleverer devil"- C.S.Lewis. From the social services in India, Education is perhaps the most appraised, evaluated and criticized. The areas of such education put to such analysis and scrutiny are education as a source of knowledge, a means of employment, social service, humane approach, values imparted and ethics of educational institutions and their products, etc. The topic of the Article revolving around Ethics, Peace and Value Education emerging need for society. Therefore is timely significant and a laudable initiative. The why of it is answered in the accepted objective of education as building a better society that is possible only from producing good people, better societies and its harmonized groups? It is here the connect of the concepts i,e Ethics, Peace and Value Education, become essential at a time when we are running fast on the road of globalization caring more for survival in competitions, trade, GDP, FDI and all money matters leaving all social concerns, Values, Ethics to a losing importance and visibility in the dust of our priorities on the run, unmindful of the truth that the sustainable development is possible where individualism keeps a room for socialism, family pleasures for social goods and rights for obligations and duties. It is to words this realization that our government and institutions like

Principal
B. B. M. B.Ed College
Sardaha, Chas, Bokaro

In this way we can say that the phrase value education as used in the area of education refers to the study of development of essential values in pupils and the practices suggested for the promotion of the same. It include developing the appropriate sensibilities- moral, cultural, spiritual and the ability to make proper value judgment and interlined then in one's life. It is an education for giving shape to the total personality at the individual. It is essentially man making and character building in the society.

Peace:

Peace is a state of being, which should be humane in every way and should guarantee serenity and security amidst adversity for the individual society and community and on the local, national and international levels. Peace education can be defined as the transmission of knowledge about requirements of the obstacles to about possibilities for achieving and maintaining peace, training in skills for interpreting the knowledge, and the development of reflective and participatory capacities for applying the knowledge to overcoming problems and achieving possibilities. Peace education is the education to develop the human being for the world of brotherhood. It is a lifelong process, in which the individual's confrontation of the major issues facing mankind should begin in childhood, puberty and continues into adulthood. The aims of Peace Education is to incorporate into the education process knowledge of the dangers posed to human life and human social life by war, violence, poverty and oppression.

TRI-DIMENSIONALMODEL OF PEACE EDUCATION.

Peace education must be education in the first place. In second place, it has to adopt peace as a task of everyone in our endear age. Peace Education can then be defined as that education which confronts young people with their responsibility for the preservation of our world and which invites them both to accept that responsibility and to give it concrete form in their own particular situation. Peace education is the continuous and life-long education. This continuing movement has been strengthened at the national, regional and international levels.

On the basis of various concept a tridimensional model of peace education is emerged which can be represented as follows:-

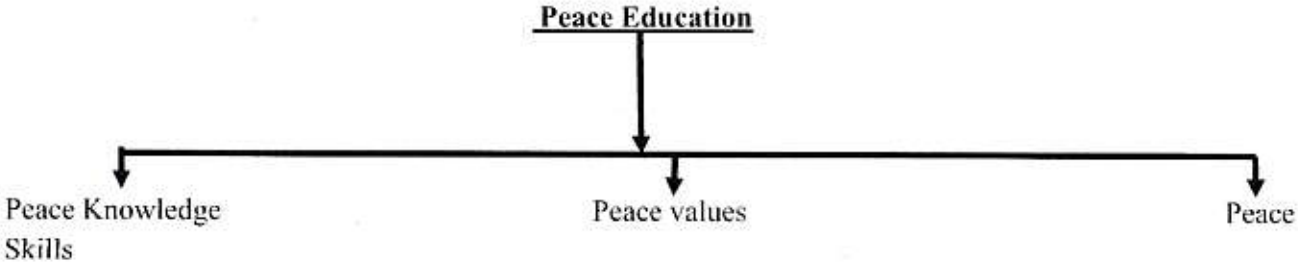

Principal
B. B. M. B.Ed College
Sardaha, Chas, Bokaro

UGC, NCERT, Professional bodies all demand not only value education but also its practice, value based education impart, social, moral, integrity, character, spirituality and many more. It builds a qualities of humanity, strength and honesty in a person. People with high ethical values will never cheat others. People are thought to cooperate with each other. They make the society happier and work hard. This Article deals with the concept of Ethics, Peace and Value education. Now its an emerging need for society to integrate by means of Education for better society.

Why Ethics, Peace and Value Education? Importance in context of today's era

Ethics and Values refer to principles that define behavior as right, good and proper. The very nature of value education implies empowering the students with certain attitudes and skills as well as giving them the critical ability to use them in the contemporary every day world, Ethics and Values play an important role in the make- up of an individual, a community and a nation. Therefore, Ethics and Values play an important role in society or in international relations too.

Peace, Values, morals, character and ethical education are gaining popularity as nation and society increasingly recognize the importance of such education. This education is the essence of healthy relationships and is essential for growth in any country and society. It influence our decision making in life and helps us to grow by building healthy relationships in society. Values influence our thoughts and actions motivate us to progress on a right path and contribute towards all round development of society and the country.

When there is uncertainty and a lot of negativity around, then Ethics, Peace and Value education channelizes energy into positive direction. It gives individuals a great sense of purpose and inculcates a sense of discipline. Thus scope of such education today has widened to cover both the moral and the social values. These are essential for peaceful living and sustainable growth in the world. The need for value education among the parents, children, constantly increasing as we continue to witness increasing violent activities, behavioral disorder, lack of unity in the society etc. There for many institutes today conduct various value education programs that are addressed to solve problems of the modern society. These programs concentrate on the development of the children, young, adults etc focusing on areas like happiness, humanity, cooperation, honesty, simplicity, love, unity, morals, peace, harmony etc. The prosperity of any country depends on its moral and character so we must cultivate values required to live in peace and ethics with society. Concrete steps are now being taken by people and we all must join this movement to see "Ethical and Peaceful society" in a very near future.

Ethics:-

Ethics are so inter-twined with values that the two terms are either used as synonyms or the former is used as an adjective to name good values as ethical values. Therefore, when a value is a decision or an action or behavior, ethics are standards of good or bad. A value is good or bad is the determination on the scale of the ethics and as earlier we have been designating values determining the behavior or action, we are using values and ethics interchangeably. Ethics means an act (Conforming to standards of conduct of a given profession). Every profession prescribes its own ethics like medical ethics for Doctors, legal ethics for Lawyers and Judges, Teachers and so on.

Principal
B. B. M. B.Ed College
Sardaha, Chas, Bokaro

If a Doctor sells samples to the patients, unnecessarily delays the treatment to charge more, prescribes unwanted pathological tests, he is said to be unethical. A Lawyer delaying the trial, charging more in the name of court fees, is unethical.

A teacher not teaching in the class to encourage his tuitions favoring some for consideration in practical marks, in copying or internal assessment is acting unethically.

Ethics is also a discipline of study, not new but since the time of Plato and Aristotle. It is a study of standards of conduct and moral judgments and it embraces all area of social life. The place of ethics has also been recognized by the post- modern era in the connection with other resources. As per Emmanuel Levinas, the Jewish philosopher it is the unique encounter with in the living other in his present and unpresentable corporeality that opens up the fields of ethics.

Value Education:-

Education needs to be enriched with values. One of Gandhi's famous quotes "Education without character" involves formulation, he presented the goal of education as the as character building , which focus on the development of courage, strength, fearlessness virtue and the ability to engage in selfless work directed at moral and spiritual aims. Moral values particularly refers to the conduct of human beings various situations in which human beings came together in the social and economic fields. Here the effort is to emphasize upon the role of value education or ethics and peace.

Value education is a term used to name several things, and there is much academic controversy surrounding it. This means that values education can take place at home, as well as in schools, colleges, universities, institutions and over all society.

Eight fold classification of values:

i. Aesthetic: Appreciation of beauty and joy.
ii. Emotional Courage: Courage, advance, Friendliness, harmony and heroism.
iii. Material: Love for many pleasure of life.
iv. Mental: Impartially and perseverance.
v. Moral: Benevolence, truth, grace, health and strength
vi. Physical: Beauty, truth, grace, health and strength.
vii. Social: Civic sense, co operation, courtesy, devotion to duty.
viii. Spiritual: Meditation, pursuit of ultimate reality civic sense, cooperation, courtesy devotion to duty.

Principal
B. B. M. B.Ed College
Sardaha, Chas, Bokaro

• Insight into conditions of war • Knowledge about the diversity of people, view points and ideologies in one's country • Obstacles in peace • Basics of human nature.	• Non- violence • Trustworthiness • Social justice • Democratic • Self respect • Self - control	• Action- struggle for peace. • Personal conflict • International conflict • Conflict resolution • Ability to make political changes.

Tri – dimensional model of peace education.

Peace means that peace present inside a national as well as amid national and there shall not be any exception it can become reality if peace is present in countries , society and it can be sorted out using positive diplomacy, strong political will and with direct use of Ethics. Peace can be attained if we all consider this world as society at large. In common we have a word for this concept "VASUDHIVA KUTUMBKAM" means we all are part of family every person of each continent is part of same society.

CONCLUSION

Human being is freewill; he had started his journey without ethics and morality. He had seen ages of cruelty and mass murders for pity matters. He doesn't like ever to be taught as its domination, but he also tried to learn from others in all possible means. Human beings are not mechanical by its genetic code, thus he never worked liked machines, his emotions and sentiments had laid foundation of relationship, his brain has advanced him to the stream of knowledge, his experience of life has planted trees of peace, he learned how to live in computer age; Solar system is small for his telescope. But the thing that makes him human, a creature different from animals is ethics and morality.

Elements of ethics are present in his mind naturally but be needs to develop it so that he could use in all aspects of life. He uses it most in blood relations and none in international politics. Value education is the best way of propagating it at steep rate, so that justice and equality forms umbrella over the society. So that interests gets peace, ethics and values becomes reality and imagination of society could at least turn into probability.

Society is the last resort of ever- changing human civilization, for this dream peace is the foundation; ethics and value education are means to achieve it. Now the focus of education should be based on the human mindset, human rights, mutual respect, mutual trust, cooperation and respect for life, social justice, open-mindedness and co-existence. It can contribute to create the aspiration for transformation of the culture of war, violence and greed into a culture of peace, where people learn to care and share to live together in a just, peaceful and compassionate society.

Principal
B. B. M. B.Ed College
Sardaha Chas. Bokaro

References:-

Chadha, S.C. (2006) Educational values & value Education. Meerut: Surya Publication

Education for values in schools- A frame work, Department of educational psychology and foundation of education, NCERT.

International politics and relations- Fadia & Fadia.

Journal of value education (2005), www.Ncert.nic.in

Meenakshi Mehta, (2007) "Importance of Value Education in Higher Education" Journal of IPEM, Vol-I.

NCERT (2002) Education for peace New Delhi NCERT.

NCERT (2005a) National curriculum frame work New Delhi NCERT.

NCERT (2005b) National focus Groups position paper vol. II National concerns NCERT (PP-183-221)

Pandya, R. (2011) value development: role of society, schools and teachers.

Peter singer. 2011. Practical Ethics, Cambridge University Press.

Passi, B.K., & Singh, P. (2005). Value education. Agra: National Psychological Corporation.

White Head (1938): Science and Modern World, Penguin Books VIIIth Edition, P.222.

Principal
B. B. M. B.Ed College
Sardaha, Chas, Bokaro

B.B.M. B.Ed. COLLEGE

SARDAHA, CHAS, BOKARO (JHARKHAND)-827013

Recognized by NCTE & Affiliated to Binod Bihari Mahto Koyalanchal University, Dhanbad , Jharkhand & J.A.C. Ranchi

Email Id- bbmbedcollege2010@gmail.com

First page of the article/journals

Approved by UGC
Journal No. : 63580
Regd. No. 21747

Indexed : IIJIF, I2OR & SJIF
I2OR Impact Factor : 4.850
ISSN 2277-2014

Research Discourse

An International Peer-reviewed Refereed Research Journal

Vol. IX No. II April-June 2019

RESEARCH DISCOURSE VARANASI

Editor in Chief
Dr. Anish Kumar Verma

Associate Editors
Dr. Rakesh Kumar Maurya
Dr. Purusottam Lal Vijay
Romee Maurya
Shivendra Kumar Maurya

International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) | I2OR | Scientific Journal Impact Factor

I2OR Impact Factor : 3.540

ISSN : 2348-4624
Year : VIII, No. : XXIX
January-March, 2021

Śodha Mīmāṁsā

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editor in chief
Dr. Rakesh Kumar Maurya

Associate Editor
Dr. Anish Kumar Verma & Dr. Devi Prabha

Published by :
Kusum Jankalyan Samiti
Deoria, U.P. (INDIA)

B. B. M. B.Ed College
Gardaha, Chas, Bokaro

AEGAEUM JOURNAL

An UGC-CARE Approved Group - II Journal

An ISO : 7021 - 2008 Certified Journal

ISSN NO: 0776-3808 / web: www.aegaeum.com / e-mail: submitaj@gmail.com

Certificate of Publication

This is to certify that the paper entitled

Ethics, Peace and Value Education: Emerging need of the society

Authored by:

Gayatri Kumari, Assistant Professor

From

B.B.M.B.Ed. College,Chas,Bokaro,Jharkhand.

Has been published in

AEGAEUM JOURNAL, VOLUME IX, ISSUE VIII, AUGUST - 2021

S. Winberger
Editor-In-Chief
AEGAEUM JOURNAL

6.2

ISO International Organization for Standardization 7021-2008

Principal
B. B. M. B.Ed College
Sardaha, Chas, Bokaro